"सतिगुर की सेवा"

• सतिगुर की सेवा निरमली निरमल जन होइ सु सेवा घाले । जिन्ह अंदर कपट विकार झूठ ओई आपे सचै वखि कढे जजमाले । (4-304)

अर्थः- सतिगुरू की बताई सेवा एक पवित्र कर्म है । जो मनुष्य निर्मल हो भाव जिस मनुष्य का हृदय मलीन ना हो वही ये मुश्किल कार कर सकता है जिनके हृदय में धोखा - विकार और झूठ है । सच्चे प्रभू ने खुद ही उन कड़वों को गुरू से अलग कर दिया है ।

• सतिगुर जिनी न सेविओ सबदि न कीतो वीचार । अंतरि गिआन न आइओ मिरतक है संसार ।

अर्थः- मनुष्य जन्म पा के भी जिन जीवों ने सतिगुरू जी की बतायी हुई सेवा नहीं की और सतिगुरू के शबद से हरी नाम की विचार नहीं की और इस तरह हृदय में सच्चा प्रकाश नहीं हुआ वह जीव संसार में जीवित होते हुए भी मरा हुआ है ।

लख चउरासीह फेर पइआ मरि जमै होई खुआर । सतिगुर की सेवा सो करे जिस नो आपि कराए सोई ।

अर्थः- चौरासी लाख योनियों में उसे चक्कर काटना पड़ता है बारंबार पैदा होता मरता और ख्वार होता है । जिस जीव से प्रभू स्वयं कराए वही सतिगुरू की बताई कार कर सकता है ।

सतिगुर विच नाम निधान है करम परापत होई । सचि रते गुर सबद सिउ तिन सची सदा लिव होई । नानक जिस नो मेले न विछुड़ै सहजि समावै सोई ।1।म05।

अर्थः- सतिगुर के पास 'नाम' का खजाना है जो प्रभू की मेहर से प्राप्त हो सकता है । जो मनुष्य सतिगुर के शबद द्वारा सच्चे नाम में रंगे हुये हैं उनकी बिरती सदा इक तार रहती है । हे नानक ! जिसको एक बारी मेल लेता है वह कभी विछुड़ता नहीं वह सदा अडोल अवस्था में टिका रहता है ।

सो भगउती जो भगवती जाणै । गुर परसादी आप पछाणै । धावत राखै इकत घरि आणै ।

अर्थः- भगउती सच्चा भक्त वह है जो प्रभू को जानता है प्रभू से गहरी सांझ डालता है और सतिगुरू की कृपा से भाव सतिगुरू की शिक्षा

लेकर अपने आप को पहचानता है । वासना की ओर दौड़ते मन को काबू में रखता है और एक टिकाव में लाता है ।

जीवत मरै हर नाम वखाणै । ऐसा भगउती उतम होई । नानक सच समावै सोई ।2।म03।

अर्थः- और जीवित होते हुए भी माया की ओर से मरा रहता है अर्थात संसार में विचरता हुआ भी मन को वासना से तोड़े रखता है । ऐसा भगउती भगत उत्तम होता है हे नानक ! वह सदा स्थिर प्रभू में लीन हो जाता है और फिर कभी नहीं विछुड़ता ।

अंतरि कपट भगउती कहाऐ । पाखंड पारब्रहम कदे न पाए । पर निंदा करे अंतर मल लाए । बाहरि मल धोवै मन की जूठ न जाए ।

अर्थः- जो मनुष्य दिल में खोट रखे पर अपने आप को भगउती सच्चा भगत कहलाए वह इस पाखण्ड से परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता । जीव पराई निंदा करके हृदय पर मैल चढ़ाए जाये और बाहर से शरीर की मैल स्नान वगैरा से धोता रहे इस तरह मन की जूठ दूर नहीं होती ।

सतसंगत सिउ बाद रचाए । अनदिन दुखिआ दूजै भाइ रचाए । हरि नाम न चेतै बहु करम कमाए । पूरब लिखिआ सु मेटणा न जाए । नानक बिन सतिगुर सेवे मोख न पाए ।3।

अर्थः- जो मनुष्य सत - संगत के साथ टकराव डाले रखता है भाव जिसे सत - संगत अच्छी नहीं लगती वह माया के प्यार में रंगा हुआ हमेशा दुखी रहता है । हरी नाम का सिमरन छोड़ के और चाहे जितने कर्म - काण्ड करता रहे इस तरह पहले किए कर्मों के अच्छे बुरे संस्कार जो मन पर लिखे गए हैं और जनम - जनम में भटकाते फिरते हैं मिट नहीं सकते

। हे नानक ! सच तो ये है कि सतिगुर द्वारा बताए कर्मों को किए बिना माया के मोह से छुटकारा हो ही नहीं सकता ।

सतिगुर जिनी धिआइआ से कड़ न सवाही । सतिगुर जिनी धिआइआ से त्रिपति अघाही । सतिगुर जिनी धिआइआ तिन जम डर नाही ।

अर्थः- जिन्होंने सतिगुरू का ध्यान धरा है वो नित्य नये सूरज दुखी नहीं होते क्योंकि जिन्होंने सतिगुरू का ध्यान धारण किया है वे दुनियावी पदार्थों की ओर से पूरी तौर पे तृप्त रहते हैं जिन्होंने सतिगुरू का ध्यान धरा है इस वास्ते उन्हें मौत का भी डर नहीं रहता ।

जिन कउ होआ कृपाल हरि से सतिगुर पैरी पाही । तिन ऐथै ओथै मुख उजले हरि दरगह पैधे जाही । 14। (3-88-89)

अर्थः- सतिगुरू की शरण भी वही लगते हैं जिन पे हरी स्वयं प्रसन्न होता है । वे दोनों जहानों से सुर्खरू रहते हैं और प्रभू की दरगाह में भी आदर पाते हैं ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"